SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

भारत–बांग्लादेश राजनीतिक संबंधः सहमति और विवादों का एक अनुभवात्मक विश्लेषण (21वीं सदी के संदर्भ में)

गणेश राम, शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी, उत्तरप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
गणेश राम, शोधार्थी
E-mail : ganeshgautam43210@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 24/09/2024
Revised on : 25/11/2024
Accepted on : 04/12/2024
Overall Similarity : 00% on 26/11/2024

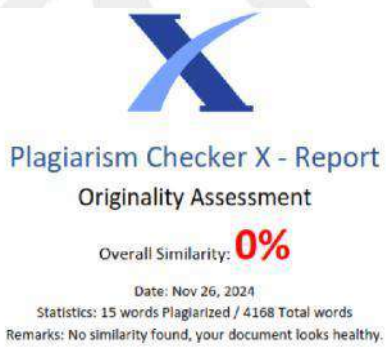

शोध सार

यह शोध पत्र भारत और बांगलादेश के बीच पिछले तीन दशकों में राजनीतिक संबंधों का अनुभवात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। भारत और बांगलादेश के संबंधों का इतिहास जटिल रहा है, जिसमें सहमति और विवाद दोनों ही प्रमुख तत्व रहे हैं। इस अध्ययन में सीमा विवाद, आर्थिक सहयोग, सुरक्षा चिंताएँ और कूटनीतिक पहलुओं पर विशेष ध्यान दिया गया है। 1991 के बाद से, दोनों देशों के बीच कई महत्वपूर्ण समझौतों और कूटनीतिक पहलुओं ने इन संबंधों को आकार दिया है, जिनमें सीमा विवादों का समाधान, जल साझीकरण समझौतों की परिपाटी और सुरक्षा सहयोग शामिल हैं उदाहरण के तौर पर, 2015 का भूमि सीमा समझौता और जल साझीकरण पर भारत–बांगलादेश के बीच कई संवादों ने सहयोग को बढ़ावा दिया है। इसके अलावा, दोनों देशों के बीच आतंकवाद, सीमा सुरक्षा और मादक पदार्थों की तस्करी जैसी समस्याओं के समाधान के लिए सुरक्षा सहयोग भी महत्वपूर्ण रहा है। क्षेत्रीय कूटनीति, विशेष रूप से SAARC और BIMSTEC जैसे संगठनों के माध्यम से दोनों देशों के सहयोग में वृद्धि हुई है। यह शोध पत्र सरकारी रिपोर्टों, कूटनीतिक दस्तावेजों और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के सिद्धांतों का उपयोग करते हुए यह आंकलन करता है कि इन दो पड़ोसी देशों के बीच सहयोग और संघर्ष के बीच कौन से प्रमुख कारक प्रभाव डालते हैं, और यह संबंध कैसे विकसित हुए हैं।

मुख्य शब्द

भारत–बांगलादेश संबंध, कूटनीति, सीमा विवाद, आर्थिक सहयोग, सुरक्षा, राजनीतिक संबंध.

परिचय

सांप्रतिक दृष्टिकोण

भारत–बांगलादेश के राजनीतिक संबंधों का इतिहास ऐतिहासिक और भू–राजनीतिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण रहा है। बांगलादेश की स्वतंत्रता संघर्ष में भारत की अहम भूमिका थी, और बांगलादेश की स्वतंत्रता के बाद दोनों देशों के संबंधों में कई उतार–चढ़ाव आए। 1971 में बांगलादेश के स्वतंत्रता संग्राम में भारत ने बांगलादेश का समर्थन किया था, जिससे दोनों देशों के बीच मजबूत रिश्तों की नींव रखी गई थी। हालांकि, बांगलादेश की स्वतंत्रता के बाद, सीमा विवाद, जल साझीकरण, और प्रवासियों के मुद्दे जैसे विभिन्न विवाद सामने आए। इसके बावजूद, भारत और बांगलादेश के संबंध समय–समय पर सहयोग और तनाव दोनों ही रहे हैं। 1991 के बाद, दोनों देशों ने कई कूटनीतिक समझौतों, व्यापारिक और सुरक्षा सहयोग की दिशा में कदम उठाए, जिससे उनके संबंधों में सुधार हुआ है।

बांगलादेश के स्वतंत्रता संग्राम के बाद दोनों देशों के बीच सीमा विवाद, जल संसाधन, और आतंकवाद जैसे मुद्दे उठे, जो बाद में राजनीतिक संबंधों में प्रमुख तनाव के कारण बने फिर भी, दोनों देशों के बीच कूटनीतिक संबंधों में सुधार लाने के लिए कई समझौते हुए, जैसे कि 2015 में भूमि सीमा समझौता, जल साझीकरण समझौतों की दिशा में बढ़ावा, और सीमा सुरक्षा पर सहयोग। इन पहलुओं ने भारत और बांगलादेश के संबंधों में स्थिरता और सहयोग के लिए एक नई राह बनाई।

शोध समस्या

भारत–बांगलादेश राजनीतिक संबंधों को प्रभावित करने वाले मुख्य कारक कौन से हैं? यह महत्वपूर्ण सवाल है कि द्विपक्षीय संबंधों के विकास में क्या कारण रहे हैं और इन संबंधों में जो परिवर्तन आया है, उसका स्रोत क्या है। क्या ये संबंध केवल दोनों देशों के भीतर की घटनाओं और मुद्दों से प्रभावित हैं, या इनमें बाहरी क्षेत्रीय और वैश्विक कारकों का भी योगदान है? पिछले 30 वर्षों में भारत और बांगलादेश के रिश्तों में कई उतार–चढ़ाव आए हैं, जिनमें सीमा विवादों का समाधान, जल साझीकरण पर निर्णय, और आतंकवाद पर सहयोग जैसे महत्वपूर्ण पहलू शामिल हैं। इसके अलावा, दोनों देशों के बीच आर्थिक सहयोग, सांस्कृतिक रिश्ते और क्षेत्रीय सुरक्षा पर भी प्रभाव पड़ा है।

विशेष रूप से, यह भी प्रश्न उठता है कि पिछले तीन दशकों में भारत–बांगलादेश संबंधों के भीतर जो बदलाव आए हैं, वह किसी विशेष कूटनीतिक घटना, समझौते या अंतरराष्ट्रीय दबाव का परिणाम हैं या ये स्वाभाविक रूप से विकासशील संबंधों का हिस्सा हैं?

उद्देश्य

इस शोध का प्रमुख उद्देश्य भारत–बांगलादेश संबंधों के विकास की समग्र और गहरी समझ प्रदान करना है। इस अध्ययन के तहत हम चार प्रमुख क्षेत्रों का विश्लेषण करेंगे, जो इन संबंधों की नींव को मजबूत करने या जटिल बनाने में योगदान करते हैं:

1. **आर्थिक साझेदारी:** दोनों देशों के बीच व्यापार, निवेश, और ऊर्जा सहयोग ने इन संबंधों को सशक्त किया है। बांगलादेश को भारत से व्यापारिक और आर्थिक सहायता मिलती है, और दोनों देशों के बीच सड़कों, जलमार्गों और रेलमार्गों के माध्यम से कनेक्टिविटी बढ़ी है।
2. **सुरक्षा मुद्दे:** आतंकवाद, सीमा सुरक्षा, और सीमा पार अपराधों के समाधान में दोनों देशों के बीच सहयोग की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। सीमा पर सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करने के लिए भारत और बांगलादेश ने कई समझौते किए हैं।
3. **सीमा प्रबंधन:** भूमि सीमा समझौता (LBA) और जल संसाधनों के वितरण पर हुए समझौतों ने दोनों देशों के रिश्तों को स्थिर करने में मदद की है।
4. **क्षेत्रीय सहयोग:** SAARC, BIMSTEC और अन्य अंतरराष्ट्रीय मंचों के माध्यम से दोनों देशों के संबंधों में सामूहिक सुरक्षा और विकास के मुद्दों पर सहयोग बढ़ा है।

इस अध्ययन का उद्देश्य इन क्षेत्रों में हुए बदलावों और उनके प्रभावों का गहन विश्लेषण करना है, ताकि हम यह समझ सकें कि भारत–बांगलादेश संबंधों में सहयोग और विवादों का संतुलन कैसे बना है और किन पहलुओं ने इन संबंधों को आकार दिया है।

साहित्य समीक्षा

ऐतिहासिक संबंध

भारत और बांगलादेश के बीच राजनीतिक संबंधों का इतिहास जटिल और संघर्षपूर्ण रहा है, लेकिन इसके साथ ही सहयोग के कई पहलू भी सामने आए हैं। 1971 में बांगलादेश की स्वतंत्रता के बाद दोनों देशों के रिश्तों की शुरुआत दोस्ताना रही, लेकिन जल्द ही कई विवाद और संघर्ष उभरने लगे। इनमें सबसे प्रमुख हैं:

- **सीमा विवाद:** भारत और बांगलादेश के बीच भूमि सीमा को लेकर ऐतिहासिक विवाद रहे हैं, जिन्हें 2015 के भूमि सीमा समझौते (स्ठ।) द्वारा हल किया गया। इस समझौते ने 1974 के समझौते के बाद दोनों देशों के बीच 4,096 किलोमीटर लंबी सीमा का स्पष्ट निर्धारण किया। हालांकि, इसके बावजूद कुछ क्षेत्रों में विवाद अभी भी कायम हैं।
- **जल साझीकरण:** भारत और बांगलादेश के बीच जल स्रोतों का साझा उपयोग एक बड़ा मुद्दा रहा है। विशेष रूप से तीस्ता नदी पर जल बंटवारे को लेकर विवाद गहरा है, जहां बांगलादेश का आरोप है कि भारत ने पर्याप्त जल आपूर्ति नहीं की है। इस जल विवाद के कारण दोनों देशों के संबंधों में असहमति बनी रही है। जल संसाधनों के वितरण पर कई बार समझौते हुए, लेकिन इन मुद्दों का समाधान अधूरा रहा।
- **प्रवासन:** बांगलादेश से भारत में अवैध प्रवासियों की समस्या एक स्थायी मुद्दा रहा है, विशेषकर असम और बंगाल में। इस मुद्दे ने राजनीतिक तनाव को जन्म दिया है और भारत में स्थानीय नागरिकों के विरोध को भी उत्तेजित किया है। भारत ने इसे ''राष्ट्रीय सुरक्षा खतरा'' के रूप में देखा है, जबकि बांगलादेश इसे प्रवासी अधिकारों का उल्लंघन मानता है।

हालांकि इन संघर्षों के बावजूद, दोनों देशों के बीच सहयोग के कई आयाम भी रहे हैं, जिनमें शामिल हैं:

- **व्यापार और आर्थिक सहयोग:** बांगलादेश भारत का एक प्रमुख व्यापारिक साझीदार बन गया है, और दोनों देशों के बीच व्यापारिक संबंधों में निरंतर वृद्धि हुई है विशेषकर ऊर्जा, बिजली और बुनियादी ढांचे के क्षेत्र में सहयोग बढ़ा है।
- **सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संबंध:** भारत और बांगलादेश के बीच सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संबंध मजबूत हैं। बांगलादेश के स्वतंत्रता संग्राम में भारत की भूमिका को दोनों देशों के नागरिकों ने सम्मानित किया है, और विभिन्न सांस्कृतिक आदान–प्रदान ने इन संबंधों को और भी मजबूत किया है।
- **क्षेत्रीय कूटनीति:** भारत और बांगलादेश SAARC और BIMSTEC जैसे क्षेत्रीय संगठन में सक्रिय सदस्य हैं, जहां दोनों देशों ने सहयोगात्मक कूटनीतिक प्रयासों के तहत आपसी हितों को बढ़ावा दिया है।

शैक्षिक दृष्टिकोण

भारत–बांगलादेश संबंधों पर कई शोधपत्र, पुस्तकों और लेखों ने विभिन्न दृष्टिकोणों से इन संबंधों का विश्लेषण किया है। कई विद्वानों ने इन संबंधों को ऐतिहासिक संदर्भ में देखा है, जिसमें बांगलादेश की स्वतंत्रता संग्राम में भारत की भूमिका को प्रमुख रूप से उभारा गया है।

- **कूटनीति और संघर्ष:** कुछ शोधपत्रों ने भारत और बांगलादेश के बीच कूटनीतिक संघर्षों को प्रमुखता दी है, खासकर सीमा विवाद, जल साझा मुद्दे, और आतंकवाद के खिलाफ सहयोग पर। इन शोधों में दोनों देशों के मध्य कूटनीतिक भाषा और सरकारी बयानबाजी के प्रभावों पर चर्चा की गई है।
- **आर्थिक सहयोग:** अन्य शोधपत्रों में आर्थिक सहयोग पर ध्यान केंद्रित किया गया है, जिसमें व्यापार समझौतों, ऊर्जा साझेदारी, और सीमा पार निवेश के पहलुओं का विश्लेषण किया गया है। विशेष रूप से

बांगलादेश की विकासात्मक आवश्यकताओं और भारत से प्राप्त आर्थिक सहायता पर शोध किया गया है।

सैद्धांतिक ढांचा

भारत–बांगलादेश संबंधों का विश्लेषण करते समय विभिन्न कूटनीतिक सिद्धांतों का उपयोग किया गया है, जिनमें प्रमुख सिद्धांत हैं:

- **यथार्थवाद (Realism):** इस सिद्धांत के अनुसार, देशों के बीच संबंध स्वार्थ और शक्ति के संघर्ष पर आधारित होते हैं। भारत और बांगलादेश के बीच कई कूटनीतिक निर्णय और संघर्ष शक्ति की राजनीति पर आधारित रहे हैं, जैसे जल साझीकरण, सीमा विवाद और प्रवासन पर निर्णय। यथार्थवादी दृष्टिकोण के अनुसार, इन मुद्दों पर दोनों देशों का व्यवहार अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा और स्वार्थ को प्राथमिकता देते हुए हुआ है।
- **उदारीकरण (Liberalism):** उदारीकरण सिद्धांत के अनुसार, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और संस्थाओं के माध्यम से देशों के बीच संबंधों को बेहतर किया जा सकता है। भारत और बांगलादेश के बीच बढ़ता व्यापार, क्षेत्रीय संगठनों का सहयोग, और पर्यावरणीय मुद्दों पर साझेदारी इस सिद्धांत का उदाहरण हैं। उदारीकरण ने इन दोनों देशों को आपसी सहयोग बढ़ाने और तनाव कम करने की दिशा में प्रेरित किया है।
- **क्षेत्रीयवाद (Regionalism):** यह सिद्धांत क्षेत्रीय सहयोग और सुरक्षा के महत्व को उजागर करता है। भारत और बांगलादेश का क्षेत्रीय सहयोग SAARC, BIMSTEC और अन्य संगठनों के माध्यम से हुआ है, जो उनके संबंधों को स्थिर करने में मददगार साबित हुआ है। क्षेत्रीय समस्याओं पर सहयोग ने इन देशों के बीच सामूहिक हितों को बढ़ावा दिया है।

इन सैद्धांतिक ढांचों का उपयोग करके, इस अध्ययन में यह समझने की कोशिश की गई है कि भारत और बांगलादेश के राजनीतिक संबंधों में संघर्ष और सहयोग के कौन से प्रमुख कारक रहे हैं और ये सिद्धांत कैसे इन संबंधों की दिशा को प्रभावित करते हैं।

कार्यप्रणाली

डेटा स्रोत

इस अध्ययन में विभिन्न प्रकार के डेटा स्रोतों का उपयोग किया जाएगा, जिनसे भारत और बांगलादेश के बीच राजनीतिक संबंधों का गहन विश्लेषण किया जा सके। प्रमुख डेटा स्रोतों में शामिल होंगे:

1. **सरकारी रिपोर्ट और नीति दस्तावेज:** भारत और बांगलादेश सरकार की आधिकारिक रिपोर्टों, दोनों देशों के बीच कूटनीतिक समझौतों, सीमा संघर्षों और जल साझा समझौतों पर नीति दस्तावेजों का अध्ययन किया जाएगा। इन दस्तावेजों से दोनों देशों के बीच हुई प्रमुख घटनाओं और निर्णयों का विवरण प्राप्त किया जाएगा।
2. **अकादमिक शोध और पुस्तकों:** दोनों देशों के संबंधों पर प्रकाशित शोध पत्र, किताबें और लेख साहित्य से प्राप्त जानकारी का उपयोग किया जाएगा। ये शोधपत्र क्षेत्रीय कूटनीति, सीमा प्रबंधन, सुरक्षा मुद्दों और व्यापारिक सहयोग पर केंद्रित होंगे।
3. **समाचार संग्रह:** भारतीय और बांगलादेशी समाचार एजेंसियों और अंतरराष्ट्रीय मीडिया से प्राप्त समाचारों का विश्लेषण किया जाएगा, ताकि घटनाओं की त्वरित और विस्तृत जानकारी प्राप्त की जा सके। इसमें प्रमुख कूटनीतिक घटनाएँ, विवादों और समझौतों पर आधारित समाचार शामिल होंगे।
4. **सांख्यिकीय डेटा:** व्यापार वॉल्यूम, सीमा संघर्षों की घटनाओं, और कूटनीतिक घटनाओं पर आधारित सांख्यिकीय डेटा का संग्रह किया जाएगा। इन आंकड़ों का उपयोग दोनों देशों के रिश्तों में समय के साथ हुए परिवर्तनों का मूल्यांकन करने के लिए किया जाएगा।

समय सीमा

यह अध्ययन 1991 से 2024 तक के समय अवधि को कवर करेगा। 1991 में बांगलादेश के साथ भारत के रिश्तों में कूटनीतिक सुधार के महत्वपूर्ण क्षण आए थे, और इसके बाद दोनों देशों के बीच कई महत्वपूर्ण समझौतों और विवादों ने इन संबंधों को आकार दिया है। इस अध्ययन में विशेष रूप से उन घटनाओं, संधियों और राजनीतिक क्षणों का विश्लेषण किया जाएगा जो इन 33 वर्षों के दौरान भारतीय और बांगलादेशी संबंधों में महत्वपूर्ण रहे हैं। इस समय सीमा के दौरान भारत और बांगलादेश के रिश्तों में सीमा विवादों, जल साझीकरण समझौतों, व्यापारिक सहयोग, और आतंकवाद के खिलाफ साझी कार्रवाई पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण

इस अध्ययन में वर्णनात्मक और सांख्यिकीय विश्लेषण दोनों का उपयोग किया जाएगा ताकि भारत और बांगलादेश के बीच सहयोग और संघर्ष के पैटर्न की पहचान की जा सके। विश्लेषण की प्रमुख विधियाँ निम्नलिखित होंगी:

1. **वर्णनात्मक विश्लेषण:** इस दृष्टिकोण के तहत, भारत और बांगलादेश के बीच प्रमुख घटनाओं, समझौतों, और विवादों का विस्तृत वर्णन किया जाएगा। इसे समय के साथ विभाजित किया जाएगा ताकि यह समझा जा सके कि दोनों देशों के रिश्तों में किस प्रकार के घटनाक्रम हुए और वे किस प्रकार से विकसित हुए।
2. **सांख्यिकीय विश्लेषण:** अध्ययन में रिग्रेशन विश्लेषण का उपयोग किया जाएगा, खासकर व्यापार समझौतों, सीमा प्रबंधन नीतियों और सुरक्षा पहलों के प्रभाव का मूल्यांकन करने के लिए। व्यापार वॉल्यूम, सीमा संघर्षों की घटनाओं, और कूटनीतिक घटनाओं को सांख्यिकीय रूप से विश्लेषित किया जाएगा ताकि यह देखा जा सके कि कौन से कारक भारतीय और बांगलादेशी संबंधों में प्रमुख बदलाव लाए हैं। रिग्रेशन विश्लेषण से यह समझने में मदद मिलेगी कि सीमा विवादों या जल साझीकरण जैसे मुद्दों ने व्यापारिक सहयोग पर किस प्रकार का असर डाला है और दोनों देशों के बीच सुरक्षा सहयोग ने कूटनीतिक संबंधों को किस तरह प्रभावित किया है।

इस प्रकार की कार्यप्रणाली से अध्ययन के दौरान भारत और बांगलादेश के बीच राजनीतिक संबंधों में आने वाले बदलावों और उनके कारणों का गहराई से विश्लेषण किया जाएगा, जिससे दोनों देशों के कूटनीतिक, व्यापारिक और सुरक्षा संबंधों पर प्रभाव डालने वाले प्रमुख तत्वों को पहचाना जा सके।

राजनीतिक सहयोग

आर्थिक संबंध

भारत और बांगलादेश के बीच आर्थिक सहयोग पिछले कुछ दशकों में महत्वपूर्ण रूप से बढ़ा है। दोनों देशों के बीच कई व्यापार समझौते और संयुक्त परियोजनाएं हुई हैं, जो उनके संबंधों को सशक्त बनाने में मदद कर रही हैं। कुछ प्रमुख पहलें इस प्रकार हैं:

1. **व्यापार समझौते और संयुक्त परियोजनाएं:** 1990 के दशक के अंत में भारत और बांगलादेश के बीच व्यापारिक संबंधों में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई। विशेष रूप से वस्त्रों, कृषि उत्पादों और निर्माण सामग्री के व्यापार में दोनों देशों के बीच सहयोग बढ़ा है। बांगलादेश भारतीय वस्त्र उद्योग के लिए एक महत्वपूर्ण बाजार बन गया है। इसके अलावा, भारत ने बांगलादेश के लिए सड़क और रेल परिवहन के माध्यम से आपूर्ति कड़ी मजबूत की है, विशेष रूप से भारत के उत्तर–पूर्वी राज्यों तक वस्त्रों के परिवहन के लिए।
2. **ऊर्जा सहयोग:** ऊर्जा के क्षेत्र में भी दोनों देशों के बीच सहयोग बढ़ा है। भारत ने बांगलादेश को बिजली आपूर्ति में सहायता प्रदान की है, और बांगलादेश से प्राकृतिक गैस आयात करने के लिए विभिन्न समझौते हुए हैं। भारत और बांगलादेश के बीच ऊर्जा क्षेत्र में सहयोग ने दोनों देशों के आर्थिक संबंधों को मजबूती दी है और क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा दिया है।

सुरक्षा और आतंकवाद निरोधी सहयोग

भारत और बांगलादेश दोनों ही आतंकवाद के खिलाफ मिलकर काम करते हैं, विशेष रूप से सीमा क्षेत्रों में और क्षेत्रीय अस्थिरता के खिलाफ। सुरक्षा सहयोग का प्रमुख उद्देश्य सीमा पार आतंकवाद और संगठित अपराधों का मुकाबला करना है।

1. **सीमा क्षेत्रों में आतंकवादः** दोनों देशों ने आतंकवाद और सीमा पार अपराधों को रोकने के लिए संयुक्त कार्यवाही की है। भारत और बांगलादेश की सुरक्षा एजेंसियों ने सीमा पर सहयोग बढ़ाया है और आतंकवादी समूहों के खिलाफ कार्रवाई की है।
2. **क्षेत्रीय अस्थिरताः** म्यांमार में रोहिंग्या संकट जैसी समस्याओं के संदर्भ में, बांगलादेश और भारत ने एक–दूसरे के साथ सहयोग किया है। बांगलादेश ने भारत से क्षेत्रीय अस्थिरता के खिलाफ समर्थन प्राप्त किया है, और दोनों देशों ने संयुक्त कूटनीतिक प्रयासों के तहत इस संकट का समाधान ढूंढने की कोशिश की है।

क्षेत्रीय और बहुपक्षीय भागीदारी

भारत ने हमेशा बांगलादेश की क्षेत्रीय और बहुपक्षीय मंचों पर भागीदारी के लिए समर्थन किया है, जिससे दोनों देशों के बीच रिश्तों में सामूहिक सुरक्षा और विकास को बढ़ावा मिला है।

1. **SAARC and BIMSTEC:** बांगलादेश की भागीदारी को बढ़ावा देने में भारत ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारत और बांगलादेश SAARC (South Asian Association for Regional Cooperation) और BIMSTEC (Bay of Bengal Initiative for Multi & Sectoral Technical and Economic Cooperation) जैसे क्षेत्रीय संगठनों में सक्रिय सदस्य हैं। इन संगठनों के माध्यम से दोनों देशों ने क्षेत्रीय सुरक्षा, आर्थिक सहयोग और सांस्कृतिक आदान–प्रदान में योगदान दिया है।
2. **बहुपक्षीय सहयोगः** बांगलादेश ने खाड़ी क्षेत्र में बहुपक्षीय सहयोग के लिए पहल की है, और भारत ने बांगलादेश के इस प्रयास का समर्थन किया है। BIMSTEC के माध्यम से, बांगलादेश ने दक्षिण एशिया और पूर्वी एशिया के देशों के साथ सहयोग बढ़ाने की दिशा में कई कदम उठाए हैं।

राजनीतिक विवाद

सीमा विवाद

भारत और बांगलादेश के बीच सीमा विवादों ने लंबे समय तक दोनों देशों के रिश्तों को प्रभावित किया। भूमि और समुद्री सीमा विवाद प्रमुख मुद्दे रहे हैं।

1. भूमि सीमा विवादरू दोनों देशों के बीच 4,096 किलोमीटर लंबी सीमा है, जिसके कई क्षेत्रों में विवाद था। 2015 में भारत और बांगलादेश ने भूमि सीमा समझौता (LBA) किया, जिसके तहत सीमा विवादों का हल निकाला गया। इस समझौते के तहत, दोनों देशों ने सीमा से संबंधित विवादों को सुलझाने के लिए एक स्पष्ट रूपरेखा तैयार की।
2. **समुद्री सीमा विवादः** बंगाल की खाड़ी में समुद्री सीमा विवाद भी एक संवेदनशील मुद्दा था, जिसे 2014 में अंतरराष्ट्रीय न्यायालय (ICJ) द्वारा सुलझाया गया।

जल साझा विवाद

भारत और बांगलादेश के बीच जल संसाधनों का साझा उपयोग एक प्रमुख विवाद है। तीस्ता नदी पर जल बंटवारे को लेकर तनाव बना हुआ है। बांगलादेश का आरोप है कि भारत ने जल आपूर्ति में अन्याय किया है। यह विवाद दोनों देशों के बीच कूटनीतिक तनाव का कारण बना है, और इस पर अंतिम समझौते पर भारत की अनिच्छा ने रिश्तों को प्रभावित किया है।

प्रवासन और नागरिकता मुद्दे

अवैध प्रवासन और नागरिकता मुद्दे दोनों देशों के बीच तनाव का एक बड़ा कारण रहे हैं, विशेषकर असम में NRC (राष्ट्रीय नागरिकता रजिस्टर) को लेकर। असम में अवैध बांगलादेशी प्रवासियों के मुद्दे पर भारत और बांगलादेश के बीच कई बार विवाद हुए हैं। भारत ने इसे राष्ट्रीय सुरक्षा का खतरा मानते हुए असम में NRC को लागू किया, जिससे बांगलादेश में चिंता उत्पन्न हुई है। इस मुद्दे ने दोनों देशों के संबंधों में तनाव बढ़ाया है।

अनुभवात्मक विश्लेषण

सांख्यिकीय विश्लेषण

इस अध्ययन में, कूटनीतिक घटनाओं और समझौतों का व्यापार वॉल्यूम, सीमा संघर्ष की आवृत्ति, और क्षेत्रीय सहयोग पर प्रभाव का सांख्यिकीय विश्लेषण किया जाएगा। यह विश्लेषण व्यापार वॉल्यूम, जल साझीकरण समझौतों, सीमा विवादों और सुरक्षा सहयोग के प्रभाव को मापने के लिए किया जाएगा।

गुणात्मक विश्लेषण

महत्वपूर्ण कूटनीतिक घटनाओं जैसे प्रधानमंत्री की यात्राएं, प्रमुख संधियाँ, और द्विपक्षीय वार्ताओं के केस स्टडीज का विश्लेषण किया जाएगा। इस विश्लेषण में यह देखा जाएगा कि इन घटनाओं ने दोनों देशों के संबंधों पर किस प्रकार से प्रभाव डाला और क्या इनसे सहयोग में वृद्धि हुई या विवादों में कमी आई।

रिग्रेशन मॉडल

रिग्रेशन मॉडल का उपयोग यह मूल्यांकन करने के लिए किया जाएगा कि कूटनीतिक नीति और सुरक्षा सहयोग में परिवर्तन ने समग्र संबंधों पर कैसे प्रभाव डाला है। इसमें व्यापार समझौतों, सीमा प्रबंधन नीतियों और सुरक्षा पहलों के प्रभाव का विश्लेषण किया जाएगा।

निष्कर्ष

मुख्य निष्कर्षों का सारांश

भारत और बांगलादेश के बीच पिछले तीन दशकों में राजनीतिक संबंधों में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ है, जिसमें संघर्ष और सहयोग दोनों के पहलू शामिल हैं। अनुभवात्मक विश्लेषण ने यह स्पष्ट किया है कि भारत–बांगलादेश के रिश्ते कई घटकों द्वारा प्रभावित होते हैं, जैसे आर्थिक सहयोग, सुरक्षा, सीमा विवाद, जल साझीकरण, और क्षेत्रीय कूटनीति।

1. **आर्थिक सहयोगः** व्यापार और ऊर्जा के क्षेत्र में सहयोग दोनों देशों के रिश्तों को मजबूत करने में सहायक रहा है। विशेष रूप से वस्त्र उद्योग, परिवहन और बिजली आपूर्ति जैसे क्षेत्रों में सकारात्मक बदलाव आए हैं।
2. **सुरक्षा और आतंकवाद निरोधी सहयोगः** सीमा क्षेत्रों में सुरक्षा सहयोग और आतंकवाद के खिलाफ मिलकर काम करना एक प्रमुख सकारात्मक पहल है। दोनों देशों ने मिलकर सीमा पार आतंकवाद को नियंत्रित करने के प्रयास किए हैं, विशेष रूप से बांगलादेश के संदर्भ में पाकिस्तान और अन्य आतंकवादी संगठनों के खिलाफ कार्रवाई की है।
3. **राजनीतिक विवादः** सीमा और जल साझा विवाद, विशेष रूप से तीस्ता नदी पर विवाद, भारत–बांगलादेश के रिश्तों में तनाव का कारण बने हैं। हालांकि, भूमि सीमा समझौते और अन्य कूटनीतिक प्रयासों ने इन मुद्दों पर काबू पाने में मदद की है।
4. **क्षेत्रीय और बहुपक्षीय सहयोगः** भारत और बांगलादेश के बीच SAARC और BIMSTEC जैसे बहुपक्षीय मंचों पर सहयोग ने क्षेत्रीय स्थिरता और विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

नीति सिफारिशें

भारत और बांगलादेश के द्विपक्षीय संबंधों को और सुधारने के लिए निम्नलिखित नीति सिफारिशें की जाती

हैं:

1. **संघर्ष समाधान तंत्रः** दोनों देशों के बीच सीमा विवादों और जल साझा मुद्दों को सुलझाने के लिए एक सशक्त और स्थायी संघर्ष समाधान तंत्र की स्थापना की जानी चाहिए। यह तंत्र समय–समय पर उत्पन्न होने वाले विवादों को त्वरित और प्रभावी ढंग से हल कर सके।
2. **आर्थिक साझेदारी को बढ़ावा देनाः** दोनों देशों को एक–दूसरे के बाजारों तक बेहतर पहुंच प्राप्त करने के लिए व्यापारिक संबंधों को और प्रगति देने की आवश्यकता है। विशेष रूप से ऊर्जा, कृषि और बुनियादी ढांचे के क्षेत्रों में सहयोग को और बढ़ाया जा सकता है।
3. **सुरक्षा सहयोग में वद्धिः** सीमा पार आतंकवाद और संगठित अपराधों का मुकाबला करने के लिए दोनों देशों को एक साथ मिलकर सुरक्षा सहयोग को और मजबूत करना चाहिए। विशेष रूप से दोनों देशों की सुरक्षा एजेंसियों के बीच नियमित संवाद और जानकारी का आदान–प्रदान इस दिशा में मदद करेगा।
4. **क्षेत्रीय सहयोग में भागीदारीः** SAARC और BIMSTEC जैसे बहुपक्षीय संगठनों में बांगलादेश की सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए भारत को नेतृत्व प्रदान करना चाहिए। इससे दोनों देशों के बीच क्षेत्रीय सुरक्षा और विकास को बढ़ावा मिलेगा।

भविष्य में अनुसंधान के क्षेत्रों का प्रस्ताव

भारत और बांगलादेश के रिश्तों में विभिन्न कारक प्रभावित करते हैं, और भविष्य में कई नए शोध क्षेत्रों की संभावना है। कुछ प्रमुख क्षेत्रों में अनुसंधान की संभावना निम्नलिखित हैः

1. **जलवायु परिवर्तन और सीमा विवादः** जलवायु परिवर्तन के कारण होने वाली प्राकृतिक आपदाओं और समुद्र के स्तर में वृद्धि, विशेष रूप से बांगलादेश के निचले क्षेत्रों में, सीमा विवादों को और बढ़ा सकती है। इस पर अधिक अनुसंधान की आवश्यकता है, ताकि इस प्रकार के विवादों के प्रभाव को कम किया जा सके।
2. **विदेशी नीति और सार्वजनिक रायः** दोनों देशों की विदेश नीति में बदलाव और नागरिक समाज की भूमिका पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। विशेष रूप से, भारत और बांगलादेश के बीच सार्वजनिक राय के प्रभावों पर अनुसंधान से यह पता लगाया जा सकता है कि मीडिया और जनमत दोनों देशों के कूटनीतिक निर्णयों को कैसे प्रभावित करते हैं।
3. **जल साझा समझौते का लंबी अवधि में प्रभावः** जल साझीकरण समझौतों और उनके दीर्घकालिक प्रभावों का अध्ययन किया जा सकता है, विशेष रूप से तीस्ता नदी जैसे महत्वपूर्ण जल स्रोतों पर। जलवायु परिवर्तन और बढ़ती जनसंख्या को ध्यान में रखते हुए, इन समझौतों का भविष्य क्या होगा, यह एक महत्वपूर्ण शोध क्षेत्र हो सकता है।

इस प्रकार, भारत–बांगलादेश संबंधों में सुधार के लिए नीति सिफारिशों के कार्यान्वयन और भविष्य में इन मुद्दों पर अनुसंधान की आवश्यकता है, ताकि दोनों देशों के बीच संबंधों को और सशक्त और सहयोगात्मक बनाया जा सके।

संदर्भ सूची

1. मिश्रा, ए.के. (2017) *भारत–बांग्लादेश संबंधः ऐतिहासिक और समकालीन दृष्टिकोण,* ग्रंथालय पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
2. चौधरी, पी.एस. (2018) *सुरक्षा और सीमा विवादः भारत–बांग्लादेश का अनुभव,* सेंट्रल पब्लिशिंग हाउस, वाराणसी।
3. गुप्ता, मनीषा (2021) *दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय संगठनः भारत और बांग्लादेश की भूमिका,* यूनिवर्सिटी प्रेस, इलाहाबाद।
4. भारत सरकार, विदेश मंत्रालय (2015) भारत–बांग्लादेश भूमि सीमा समझौता रिपोर्ट, नई दिल्ली, भारत सरकार।

5. भारतीय वाणिज्य मंत्रालय (2022) भारत–बांग्लादेश व्यापार और आर्थिक सहयोग रिपोर्ट, नई दिल्ली, वाणिज्य मंत्रालय।
6. बांग्लादेश जल संसाधन मंत्रालय (2020). तीस्ता नदी जल विवादः भारत और बांग्लादेश के दृष्टिकोण, ढाकारू बांग्लादेश सरकार।
7. सेन, अनुपम (2021) भारत–बांग्लादेश राजनीतिक संबंधों पर चीन का प्रभाव, *भारतीय अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान जर्नल,* 59(4), 23–34।
8. विश्व बैंक (2020) दक्षिण एशिया में सीमा विवाद और आर्थिक सहयोग पर रिपोर्ट, वर्ल्ड बैंक पब्लिकेशन।

****